# तुलसीदास के राम : 'रामचरितमानस' और 'कवितावली' के विशेष संदर्भ में

**Dr. B. J. Patel**
Associate Professor in Hindi
Smt. B. V. Dhanak College,
Bagasara

हमारे संतों, भक्तों, कवियों, मनीषीयों, चिंतकों आदि ने समय-समय पर अपने भावों और विचारों के अनुसार अपने-अपने राम का गुणगान किया है। इन सब ने राम की मनभावन मूरत को अपनी श्रद्धा के अनुसार व्याख्यायित कर अपनी कर्तव्यनिष्ठा भलीभाँति निभायी है। इस सूची में हम गोस्वामी तुलसीदास को बहुत ही ऊँचा स्थान देते हैं। राम का जाना-पहचाना रूप कहीं-कहीं हमें बदला हुआ अलग-सा प्रतीत होता है, वहाँ बेशक तुलसीदास की चारित्रिक उन्नयन की फलश्रुति ही दृष्टिगत होगी। वस्तुतः जिसे हम समाज विज्ञान की भाषा में सूक्ष्म अन्वेषण दृष्टि और काल संसक्ति कहते हैं, मूलतः वही मूल्य तुलसी की लोकप्रियता और लोकविश्वास के मूलाधार हैं। 'राम' पर वाल्मीकि ने भी लिखा और 'राम' पर स्वयंभू, कृतिवास, केशवदास तथा मैथिलीशरण गुप्त ने भी लिखा, किंतु 'राम' पर तुलसीदास ने जो लिख दिया, उसकी पुनरावृत्ति शायद ही कभी संभव हो पाए।[1] तुलसी का साहित्य भक्तिमूलक होने के कारण उनमें वस्तु की अपेक्षा आत्मतत्त्व प्रधान हो जाता है। अतः उनके साहित्य में मानव-चरित सौंदर्यात्मकता के व्यापकत्व के साथ प्रस्तुत होता है। तुलसी का काव्यगत सत्य धर्म से ही प्राणवंत है। धर्म का आधार पवित्र जीवन ही हो सकता है। रामकथा को तुलसीदास बार-बार पावन कहते हैं। अतः पवित्रता, सत् आचरण, सत् चिंतन उनके समग्र साहित्य की सात्विक अनुभूति हो सकती है। गोस्वामी तुलसीदास सबसे पहले रामभक्त और उसके बाद ही दार्शनिक, चिंतक एवं सुकवि कहे-माने जाते हैं। वे भक्तिकाल के समस्त कवियों, सन्तों और दार्शनिक चिंतकों से अधिक पढ़े-लिखे, विचारवान् और अनुभवी व्यक्ति थे।[2]

तुलसीदास के द्वारा राम और राम नाम की महिमा कई प्रकार से गाई जा सकती थी; परंतु तुलसी की विशेषता यह है कि उन्होंने राम को सामाजिक जागतिक और समकालीन मूल्यों के आदर्शों का जीवन्त प्रतीक बना दिया है। तुलसी के राम उन समस्त गुणों के योग और प्रतीक हैं जो समाज को तब तक ज्ञात और मान्य थे। उनके यहाँ निर्गुण ब्रह्म की सत्ता की अस्वीकृति नहीं है, रामचरितमानस में और अन्य कृतियों में उसका भूरिशः उल्लेख है, विवेचना है, किन्तु चित्रण तुलसी सगुण और लोकमंगल-विधायक राम का ही करते हैं। भक्ति और कविता का आधार लौकिकता और लौकिकता का भावोत्पादक चित्रण ही है। तुलसी के यहाँ राम, भक्ति और कविता तीनों का गहरा सम्बन्ध लोकमंगल और विवेक से है। राम के आ जाने से उनकी कविता में अन्य गुण स्वतः खिंचकर आ जाते हैं।[3] राम की छवि को रमेश कुन्तल मेघ (तुलसी को) आधुनिक वातायन से निहारते हुए लिखते हैं, "तुलसीदास के श्रीराम के चरित्र के इतिहास-आलेख-कारी (हिस्टोरियोग्राफ़ी) का महाकाल-पटल इतना विशाल तथा विराट् है !

इस तरह तुलसी ने सापेक्ष्यतः लोकाभिमुख (लोकायतिक) अवतार को तो परब्रह्म में विराटीकृत किया तो दूसरी ओर आभिजात्य संस्कृति के ऐश्वर्य पुरुषोत्तम श्रीराम को ग्रामीण संस्कृति के मर्यादा पुरुषोत्तम राम में इतिहासावरेखित कर दिया। सभ्यता के चरित्र के शैलीशास्त्र में भी उनकी यह महत्तम देन है। उनमें दो सांस्कृतिक दृष्टियों (राम का परब्रह्मीकरण बनाम ग्राम्यीकरण), तथा दो दार्शनिक दृष्टिकोणों (लोकायतिक बनाम आध्यात्मिक वैष्णव) के बीच के कई आन्तरिक अन्तर्विरोध राम के सामंजस्य (सिन्थेसिस) में परिलक्षित होते हैं। श्रीराम के स्वरूप तथा कथा को लेकर उनकी दूसरी महत् उपलब्धि अविरल ऐतिहासिक चेतना की सिद्धि है।"[4] सच तो यह है कि तुलसीदास ने अपनी कविता में अपने देखे हुए जीवन का बहुत गहरा और व्यापक चित्रण किया है। उन्होंने राम के परम्परा प्राप्त रूप को अपने युग के अनुरूप बनाया है। उन्होंने राम की संघर्ष-कथा को अपने समकालीन समाज और अपने जीवन की संघर्ष-कथा के आलोक में देखा है। उन्होंने वाल्मीकि और भवभूति के राम को पुनः स्थापित नहीं किया है, बल्कि अपने युग के नायक राम को चित्रित किया है। एक शोध-

प्रपत्र की मर्यादा में रहकर तुलसी के राम को यहाँ प्रस्तुत करने का मेरा छोटा-सा प्रयास मात्र है, जिसे मैंने तुलसी साहित्य के संदर्भ में अनावृत करने का उपक्रम रखा है।

**राम का स्वरूप और तुलसीदास के राम :**

राम के मर्यादापुरुषोत्तमीय रूप से कोई भी अनभिज्ञ नहीं है। राम के तन-मन और कर्मशील स्वरूप को हम सब भलीभाँति जानते हैं। राम तो मूलतः एक ही हैं और वे सबके हैं, फिर तुलसी के राम का क्या मतलब? बात यह है कि राम तत्त्वतः तो एक ही हैं किंतु सबके होते समय वे हर एक की भावना के अनुरूप ही उसके होते हैं। जैसे एक ही दीपशिखा अलग-अलग रंग के शीशों के द्वारा देखी जाने पर अलग-अलग रंग की दिखाई पड़ती है वैसे ही एक राम अपने भक्तों के परितोष के लिए उनके भावानुरूप उनके अंतःकरणों में अनंत रूपों में प्रकट होते हैं। ये भक्त अपनी-अपनी दृष्टि, भावना और क्षमता के अनुरूप उनका गुणगान करते हैं। तुलसी ने इस मान्यता को सिद्धांत और व्यवहार दोनों स्तरों पर स्वीकार किया है। उन्होंने एक ओर 'जथा अनंत राम भगवाना, तथा कथा कीरति गुन गाना' कहा है तो दूसरी ओर धनुष यज्ञ में पधारने पर श्रीराम को भिन्न-भिन्न व्यक्तियोंने किस प्रकार भिन्न-भिन्न रूपों में देखा, इसका सरस वर्णन भी किया है 'जिन्ह के रही भावना जैसी, प्रभु मूरति तिन्ह देखी तैसी' का व्यावहारिक उदाहरण भी प्रस्तुत किया है। तो तुलसी के राम का अर्थ हुआ तुलसी की भावना के अनुसार तुलसी साहित्य में चित्रित राम।[5]

यहाँ एक बात का जीक्र करना आवश्यक है कि कोई भी नये चरित्र की उद्भावना में किसी भी रचनाकार को कठिनाई महसूस नहीं होती; जबकि बहुमान्य पुराने चरित्र को संस्कारित कर नया रूप देना दुष्कर कार्य है। यह बहुमुखी प्रतिभा से ही संभव हो सकता है। हमें कहना पड़ेगा कि तुलसीदास ने यह कार्य बखूबी कर दिखाया है। और एक बात, तुलसी साहित्य का अंतिम मूल्य है-रामभक्ति। इस दृष्टिकोण को उन्होंने कई माध्यमों से रखा है, यथा-अपने जीवन के अंतिम लक्ष्य के रूप में, कथाओं की संपूर्ण निष्पत्ति के रूप में तथा कथाओं में स्वीकृत विविध पात्रों की सदेच्छा से जोड़कर तुलसी की कृतियों में व्यक्त उनकी 'रामभक्ति' की सर्वोच्च अवधारणा का एक क्रमिक इतिहास देखा जा सकता है। रामचरितमानस, कवितावली, दोहावली, राम गीतावली, (हनुमान) बाहुक, विनयपत्रिका में क्रमशः उनकी भक्ति के जिस स्वरूप का विकास मिलता है, वह उनकी राममयी साधना तथा संसक्ति की क्रमशः विकसित होती हुई बलवत्तर एवं दृढ़तर दृष्टि से जुड़ी है।[6] तुलसीदास की सांस्कृतिक-मनोवैज्ञानिक-सौंदर्यात्मक देन तो स्वयं तुलसी के राम के अनेक सूर्यवंशी श्रीरामों के स्वरूपों की है जो 'रामलला नहछू', 'जानकीमंगल', 'रामचरितमानस', 'रामाज्ञाप्रश्न', 'वैराग्य संदीपनी', 'गीतावली', 'दोहावली', 'बरवै रामायण', 'विनयपत्रिका', 'कवितावली' तथा 'हनुमानबाहुक' में प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष ढंग से चरित्रांकित हुए हैं। इस स्थिति में तुलसीदास और उनके इतने सूर्यवंशी श्रीरामों से हमारा लगभग सर्वांगीण साक्षात्कार होता है।

**'रामचरितमानस' में राम का स्वरूप :**

'रामचरितमानस' तुलसीदास की कवित्व-प्रतिभा, दाक्षिण्य और पाण्डित्य आदि सभी दृष्टियों से उनकी कीर्ति का आधार स्तम्भ है। इसमें कवि ने पुराण और चरित काव्यों की शैलियों का सुन्दर समन्वय करके, देश-काल के संदर्भ में भगवान् के जन्म से लेकर राज्यारोहण तक की समूची घटनाओं का मार्मिक एवं प्रभावी चित्रण किया है। महाकाव्यों की परम्परा का भी कवि ने समग्र निर्वाह किया है। आज तक जितना भी हिन्दी साहित्य सिरजा गया है, इस रचना को उन सबमें सर्वोत्कृष्ट होने का गौरव प्राप्त है। इसका उद्देश्य और संदेश महान् एवं देश-कालातीत, सार्वकालिक एवं सार्वजनीन स्वीकारे जाते हैं।[7] मूलतः 'रामचरितमानस' का कथाविन्यास वाल्मीकि रामायण तथा अध्यात्म रामायण के आधार पर हुआ है। फिर भी अनेक स्थलों पर कथानक के विन्यास में अंतर है, संभवतः यह अंतर कथानक में विशिष्टता लाने के हेतु ही किया गया प्रतीत होता है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम के चरित्रांकन में गोस्वामीजी ने सामान्य मानवीय गुणों का समावेश कर उनकी महती शक्ति को सीमित करने का प्रयास किया है। राम एक सामान्य मानवी-सा व्यवहार करते हुए छिपकर बालिवध करते हैं, वहाँ उनका चरित्र अतिसामान्य दृष्टिगत होता है। राम का चरित्र एक ऐसे आदर्श नायक का चरित्र है, जो अनंत शक्ति रखते हुए भी मानवीय आचरण का प्रदर्शन करता है; वहाँ पाठक आश्चर्य का भाव अनुभूत करता है। डॉ. सोमनाथ शुक्ल स्पष्टतया मानते हैं कि अवतार लेने पर भी राम नित्य,

अजन्मा, व्यापक, अद्वितीय, अनादि तथा करुणा की खान हैं। जैसे सूर्य और सूर्य का प्रकाश पृथक् पृथक् हैं, तथा पृथक् नहीं भी हैं। उसी प्रकार राम संसार से भिन्न तथा अभिन्न दोनों ही हैं। राम, सांस्कृतिक संकट में मानव जाति का नेतृत्व स्वीकार कर, सर्व प्राणियों में मानवीय श्रेष्ठता या उच्च तथा उदार मानवता की प्रामाणिकता सिद्ध करते हैं। तुलसी की सबसे बड़ी उपलब्धि है-'राम'। उनके जीवन की मनुष्यता के सर्वोच्च आदर्श 'राम' हमें आज भी प्रेरित करते हैं। ये वे राम नहीं हैं, जो मन्दिर की मर्यादा भंग करनेवाले शूद्र की गर्दन उतारने के लिए दौड़े थे। तुलसी की वास्तविक मनुष्यता से निर्मित 'राम' वर्ण-व्यवस्था पर आधारित सामन्ती समाज के मानव-सम्बन्धों की समूची आचार-व्यवस्था का कहीं से भी उल्लंघन किये बिना केवट, गुह, निषाद के साथ ही कोल, किरात, भील आदि जंगली असभ्यों को भी गले लगाते हैं।[8]

उदयभानु सिंह के मत से तुलसी ने राम का चित्रण दो दृष्टियों से किया है। भक्तिदृष्टि से उनके ईश्वरत्त्व का प्रतिपादन किया गया है। उन्होंने अधर्म और अधर्मियों के नाश, धर्म-संस्थापन तथा भक्तों को लीला का आनंद देने के लिए अवतार लिया है। राक्षसों का वध, शरणागतों की रक्षा, राम-राज्य की स्थापना एवं ऋषि-मुनियों आदि को अनुगृहित करके वे उक्त कार्यों का संपादन करते हैं। वे नर-लीला कर रहे हैं, इसलिए कवि को उनके ईश्वरत्व की बार-बार याद दिलानी पड़ी है। ..... काव्यदृष्टि से, राम में धीरोदात्त नायक के सभी सामान्य तथा विशिष्ट गुणों का निधान है-कुलीनता, सुंदरता, सुशीलता, विनय, मधुरता, प्रियवादिता, विदग्धता, त्याग, दक्षता, पवित्रता, तेजस्विता, लोकप्रियता, बुद्धि, उत्साह, स्मृति, प्रज्ञा, मान, गंभीरता, क्षमा, धीरता, उदात्तता, दृढ़ता, महाप्राणता, शूरता, शास्त्रज्ञता, धार्मिकता आदि । उनका सारा चरित्र इन विशेषताओं से परिपूर्ण है।[9]

मानस के सर्वप्रमुख पात्र हैं राम। प्रधान पात्र होने के कारण जितनी भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में उनका जीवन दिखाया गया है, और किसी पात्र का नहीं। भिन्न-भिन्न मनोविकारों को उभारने वाले जितने अधिक अवसर उनके सामने आए हैं, उतने और किसी पात्र के सामने नहीं है। ++++++ अनन्त शक्ति के साथ धीरता, गंभीरता और कोमलता राम का प्रधान लक्षण है। यही उसका रामत्व है। अपनी शक्ति की स्वानुभूति ही उनके उस उत्साह का मूल है जिससे बड़े-बड़े दुःसाध्य कार्य सम्पन्न हुए।[10] तुलसी के राम बुद्धिमान, धर्मज्ञ, यशस्वी, प्रजाहितैषी, धर्मरक्षक, गोपालक, सत्यनिष्ठ, लोकप्रिय बलिष्ठ, शत्रुजयी, महान त्यागी, धैर्यवान, प्रियदर्शी, शक्ति-शील-सौंदर्य के अगाध भण्डार, धर्मात्मा एवं उच्चतम आदर्श के प्रतीक हैं। वे विश्वरूप होकर भी मानव है और मानव होकर भी परब्रह्म स्वरूप है। तुलसी ने राम को मानव एवं ब्रह्म दोनों रूपों में चित्रित करके एक मानव की महत्ता एवं गुरूता का अच्छा निरूपण किया है। दशरथ-सुत राम का आविर्भाव कभी अयोध्या में हुआ हो या न हुआ हो किन्तु तुलसी ने अपनी आजीवन साधना और चिन्तनानुभव के बल पर राम की जिस भावमयी और भुवन-विमोहक शक्ति शील समन्वित छवि की कल्पना की है उसका अस्तित्व असंभव कदापि नहीं कहा जा सकता ।[11] निस्संदेह राम आदर्श के उत्तम शिखर पर प्रतिष्ठित मानव हैं, किन्तु तुलसी ने अपनी उर्वर कल्पना एवं उत्कृष्ट प्रतिभा द्वारा मानव में देवत्व की अथवा व्यक्ति में ब्रह्म की जो स्थापना की है, वह सर्वथा प्रशंसनीय है।

**'कवितावली' में राम का स्वरूप :**

'कवितावली' भगवान की पुनीत जीवनगाथा से अलंकृत है। इसमें तुलसी ने राम के ऐश्वर्य को प्रधान स्थान दिया है। ऐश्वर्य और शक्ति का चित्रण तो कोमल-कान्त पदावली में संभव ही नहीं, अतः इसी से प्रेरणा पाकर गोस्वामीजी ने कवित्त, छप्पय, झुलना आदि छंदों का चयन किया है। राम के चरित्र में मर्यादा पुरुषोत्तम का भाव है, अतः तुलसी ने दास्य भाव की उपासना करते हुए राम की शक्ति और मर्यादा का चित्रण करना उचित समझा और ओजपूर्ण कवित्त रचना की सृष्टि की है। तुलसीदास 'कवितावली' में रूप के सुन्दरतम को सृजन करने के प्रति सचेष्ट हैं। आराध्य शिशु राम की कोमल रूप झांकी, युवा राम के रूप की रससिक्त कर देने वाली रूपाकृति, पथिक वेश में विचरते श्रीराम का स्पृहणीय रूप, कंचन मृग के पीछे धनुष लिए दौड़ते राम की अद्भुत छवि एवं सौंदर्य की अद्वितीयता को चित्रित करने के क्रम में सर्वथा सक्षम हैं। 'कवितावली' के राम अनाथ के अपने हैं और सरनागत है। वे राखनहारा है। वे गरीब-दीनहोन लोगों से प्रीति रखते हैं। इसीलिए उन्होंने कोल, किरात, केवट, पषान, कवि, भालु, शबरी आदि को तारा है। कवि ने मूलरूपेण सुग्रीव और

विभिषण पर की गई रामकृपा का बिरुद बखाना है। तुलसी लिखते हैं-

रामु मातु, पितु, बन्धु, सुजन, गुरु, पूज्य, परमहित।
साहेबु, सखा, सहाय, नेह-नाते, पुनीत चित ।।
देसु, कोसु, कुलु, कर्म, धर्म, धनु, धामु, धरनी, गति।
जाति-पाँति सब भाँति लागि रामहि हमारि पति ।।
परमारथु, स्वारथु, सुजसु, सुलभ राम तें सकल फल ।
कह तुलसिदासु, अब, जब-कबहुँ एक रामते मोर
भल।।[12]

(कवितावली-110)

अर्थात् हमारे माता-पिता, बन्धु, आत्मीय, गुरु, पूज्य, और परम हितकारी राम ही हैं। राम ही हमारे स्वामी, सखा और सहायक हैं तथा पवित्र चित्त से जितने प्रेम के सम्बन्ध हैं, सब राम ही हैं। हमारे देश, कोश, कुल, धर्म-कर्म, धन, धाम और गति भी राम ही हैं। हमारे जाति-पाँति भी राम ही हैं और हमारी प्रतिष्ठा भी सब प्रकार श्रीराम ही के पीछे हैं; परमार्थ, स्वार्थ, सुयश, सब प्रकार के फल हमें राम ही से सुलभ हैं। गोसाईजी कहते हैं कि अभी या जब भी कभी हो, मेरा भला तो एक राम ही से होगा। कवि यह भी घोषणा करता है कि केवल वानर के चरवाहे राम के भजने के कारण ही वह गोस्वामी तुलसीदास बन गया है। अतः उसके ये नए श्रीराम परब्रह्म राम तथा राजाधिराज श्रीराम साहिब से ज्यादा मध्यकालीन लोक में घुमने तथा नेतृत्व करने वाले 'रघुनायक' अर्थात् नेता राम हैं। वे प्रमुखतः रक्षक, दीनदयाल, सरनागतपाल कृपाल, ग़रीबनवाज़, अनाथों के दाहिने हैं। ये 'रघुनाथ' अनाथ के नाथ हैं। श्रीराम का रघुनाथ-रघुनायक वाला यह नया समीकरण बेहद सामाजिक एवं ग्राम्य स्तर पर राजनीतिक है। ये राम ऐसे हैं जैसे कामदेव पंचबाण धारण किए हुए हों। यह राम ग्रामवधू-सी सीता (तिय) की आतुरता देखकर अनुमुख हो जाते हैं तथा सीता के पैरों में चुभे हुए काँटे भी निकालते हैं। इसी तरह भोली पवित्र हरिणियों एवं ग्रामवनिताओं के बीच राम पंचबाण धारण किए हुए साक्षात् कामदेव हैं। 'कवितावली' में श्रीराम के माध्यम से उन्होंने समकालीन ग्रामीण भारत की इतिहास कथा तथा अपनी करुण आत्मकथा, दोनों ही लिखी हैं। अतः यहां श्रीराम का स्वरूप कवि तथा लोक, दोनों को प्रतिबिंबित करता है।

**तुलसीदास की अन्य रचनाओं में राम :**

**'रामलला नहछू' के राम :**

'रामलला नहछू' के राम एक साधारणतम दूल्हा हैं, जो अश्लील गालियों में भी रस लेते हैं। यहाँ राम के मर्यादावाद तथा मायावाद, दोनों का जंजाल नहीं है। इस राम की रसिकता मंगल और सहज है। तुलसी ऐसे रसिक श्रीराम को बाद की कोई भी रचना में याद नहीं कर पाए।

**'जानकीमंगल' के राम :**

'जानकीमंगल' के श्रीराम अवतारी पुरुष और राजकुमार हैं। वे स्वयंवर में वीरपुरुष हैं, तो विवाह में सुकुमार नर। श्रीराम ब्रह्ममय हैं, तो साथ ही साथ रूप और शील, उम्र और वंश की सामंतीय दृष्टि से परिपूर्ण हैं। यहाँ श्रीराम के विवाह को लेकर तुलसी की इतिहास-चेतना का प्रथम अंकुरण तथा राम के ब्रह्मत्व की प्रथम अभिव्यक्ति भी मिलती है।

**'रामाज्ञाप्रश्न' के राम :**

'रामाज्ञाप्रश्न' में रामभक्ति शकुनशास्त्र के साथ जुड़ी प्रतीत होती है। यहाँ तुलसी ने रामकथा की समस्त घटनाओं के सुफल-कुफल को अपने समाज से जोड़कर राम को ज्योतिषपुरुष के रूप में प्रस्तुत किया है। तुलसी के ये राम अतिप्राकृतिक तत्त्वों के अंधविश्वासों से मुक्ति दिलाकर आचरणमूलक सौभाग्य का प्रसार करते हैं।

**'वैराग्य संदीपनी' के राम :**

'वैराग्य संदीपनी' में तुलसी के राम उनकी ही नज़रों में कुछ ऐसे हैं-

अज अद्वैत अनाम, अलख रूप-गुन-रहित जो ।
माया पति सोइ राम, वास हेतु नर-तनु-धरेउ।।"

(वैराग्य संदीपनी-4)

'वैराग्य संदीपनी' में अज, अद्वैत, अनाम, निर्गुण मायापति अवतार राम के प्रताप का प्रभाव तीनों तापों से 'शान्ति' के रूप में प्रस्तुत है। जो जन्मरहित है, अद्वितीय है, नामरहित है, अलक्ष्य है, (प्राकृत) रूप और (माया के तीनों) गुणों से रहित है व माया का स्वामी है, वही तत्त्व श्रीरामचन्द्रजी हैं, जिन्होंने (अपने) दास-भक्तों के लिए मनुष्य-शरीर धारण किया है। तुलसी प्रेमघन राम की प्रीत को सभी प्रकार के मनोविकारों के मल से विशुद्ध करके विमल बना देते हैं। वे यहाँ घनश्याम राम से रोमांटिक-

प्राकृतिक आध्यात्मिक प्रेम का निवेदन करते हुए दिखाई देते हैं।

**'गीतावली' के राम :**

यहाँ राम के महाकाव्यात्मक चरित में झाँकियों का चयन तुलसी की निजी अभिरुचि और जीवनदृष्टि का परिचायक है। यहाँ तुलसी ने परब्रह्म राम या मर्यादापुरुषोत्तम के बजाय एक हिन्दू राजवंश के महल तथा राजधानी में शिशु राम, किशोर राजकुमार राम तथा आदर्श सम्राट् राम की एक वर्ष की चर्या को अंकित करके एक हिन्दू सम्राट् के धर्मपरायण तथा आनंदपूर्ण जीवन की प्रतिकल्पना की है। यहाँ किसी एक समकालीन राजपूत राजा की ललित-मंगल राजचर्या का आदर्शीकरण है। यहाँ आध्यात्मिक रंग न्यून है क्योंकि सभी रघुवर छवि में रंगे हुए हैं। यहाँ कवि ने राजाधिराज राम के राज्य का ललित और मधुर जीवन अंकित किया है जहाँ लोकोत्सवों की भीड़-भाड़ में स्वयं राम भी हर्षपूर्वक हँसकर हिस्सा लेते हैं। यहाँ एक मंजुल पद उद्धृत करने का मोह त्याग नहीं सकता-

सरजु मज्जन किए, संग सज्जन लिए, हेतु जन पर हिये, कृपा कोमल घनी सजनि !
आवत भवन मत्त गजवर, गवन, लंक मृगपति ठवनि कुँवर कोसलधनी ।।"

(गीतावली उत्तरकाण्ड-5/2)

प्रेमी राम की यह अद्वितीय तथा एक अकेली झाँकी है, कि जहाँ स्वयं रसिक राम सिया के अंग-प्रत्यंगों पर धातुओं से कामशास्त्रीय पत्रपुष्प-रचना करते हैं, फूलों के आभूषणों से प्राणप्रिया को सजाते हैं। यहाँ वे कामुक नहीं, मधुर हैं। उनकी यह क्रीड़ा कामकला का स्वीकृत अंग है। शायद यह तुलसी की निजी अभिरुचि या वैयक्तिक मान्यता की परिचायक चित्रावली हो सकती है।

**'दोहावली' के राम :**

यहाँ राम का चरित्रांकन क्रमबद्ध रीति से प्रस्तुत नहीं हुआ है, परंतु रामनाम से सम्बद्ध बहुत से दोहे यहाँ विद्यमान हैं। तुलसी स्वयं चातक की भाँति राम-भक्ति में लीन हैं, रामनाम में कितनी शक्ति है, यह इस दोहे से स्पष्ट होता है-

राम नाम कलि कामतरु राम भगति सुरधेनु ।
सकल सुमंगल मूल जग गुरुपद पंकज रेनु।।
राम नाम कलि कामतरु सकल सुमंगल कंद।
सुमिरत करतल सिद्धि सब पग पग परमानंद।।"

(दोहावली-27/28)

श्रीराम का नाम कलियुग में कल्पवृक्ष के समान है और सब प्रकार के श्रेष्ठ-से-श्रेष्ठ मंगलों का परम सार है। राम नाम के स्मरण से ही सब सिद्धियाँ वैसे ही प्राप्त हो जाती है, जैसे कोई चीज हथेली में ही रखी हो और पद-पद पर परम आनंद की प्राप्ति होती है। 'दोहावली' में संकलित भक्ति-सम्बन्धी हर दोहे में यही लगन देखी जा सकती है। कवि ने भक्ति के आदर्श के अतिरिक्त कुछ दोहों में राम-भजन की महिमा भी गाई है। कुछ दोहों में अपने आराध्य प्रभु राम की महिमा का बारम्बार गायन किया है।

**'बरवै रामायण' के राम :**

'बरवै रामायण' में राम के चरित्र तथा शीलस्वभाव का आलंकारिक शैली में वर्णन विद्यमान है। इसके राम सुंदर व सुकुमार हैं। कवि ने दूलह राम के साथ-साथ लोककल्याणकारी राम-नाम का वर्णन किया है। वनवासी राम नारायण ऋषि अथवा विष्णु अथवा कामदेव लगते हैं। तुलसी राम का स्वरूप-वर्णन कुछ इस तरह करते हैं-

साधु सुसील सुमति सुचि सरल सुभाव ।
राम नीति रत काम कहा यह पाव ।।

(बरवै रामायण-7)

अर्थात् श्रीराम साधु (परम सज्जन), उत्तम शीलसम्पन्न, उत्तम बुद्धिवाले, पवित्र, सरल स्वभाव के तथा न्यायपरायण हैं, भला कामदेव यह (सब) कहाँ पा सकता है ?

**'विनयपत्रिका' के राम :**

राम का चरित्रांकन करते हुए तुलसी ने लिखा है-

देव ! दूसरो कौन दीन को दयालु ।
सीलनिधान सुजान सिरोमनि, सरनागत-प्रिय प्रनत-पालु ।।

(विनयपत्रिका-154/1)

हे देव ! (आपके सिवा) दीनों पर दया करनेवाला दूसरा कौन है ? आप शील के भण्डार, ज्ञानियों के शिरोमणि, शरणागतों के प्यारे और आश्रितों के रक्षक हैं।

'विनयपत्रिका' का मूल मंतव्य सांसारिक असारता के बीच राम की अनन्य शरणागति का निर्देश है।

**'हनुमान बाहुक' के राम :**

'हनुमान बाहुक' में बूढ़े सन्त कवि तुलसीदास बाहुपीड़ा, पाँवपीड़ा, पेटपीड़ा, मुखपीड़ा, प्लेग, पीलिया आदि रोगों से ग्रसित हैं। अपना दारिद्रय और दुःख-दोष दूर करने के लिए शिव या राम को बिनती नहीं करते, परंतु वे हनुमान की शरण में जाते हैं। हनुमान श्रीराम के प्रथम दूत एवं सेवक हैं और तुलसीदास स्वयं हनुमान के सेवक हैं। अतः उनकी वृत्ति-दृष्टि हनुमान पर है। हनुमान से प्रार्थना करने का प्रमुख कारण यह है कि उनके ही बल से राजा रामचन्द्र ने देवताओं के सब काम पूरे किए थे। राम नाम में कितनी शक्ति है इसका अंदाज़ा तुलसी के अलावा कौन लगा सकता है!

राम नाम जगताप कियो चहों सानुराग,
काल कैसे दूत भूत कहा मेरे मान हैं।
सुमिरे सहाय रामलखन आखर दोऊ,
जिनके समूह साके जागत जहान हैं ।।"

(हनुमानबाहुक-39)

अन्त में तुलसी अपनी भक्ति, वैराग्य ज्ञान आदि के सभी श्रद्धा-विश्वास दाँव पर रख देते हैं। शायद इन सब पर उन्हें अब गहरी चिन्ता व शंका होने लगती है। एक श्रीरामविहीन संसार और क्रूर वर्तमान काल (कलिकाल) का भयानक यथार्थ उन्हें मौन कर देता है।

निष्कर्षतः कहें तो यहाँ उपर्युक्त विवरण से तुलसी के राम का स्वरूप अंशतः स्पष्ट हो पाया है। जहाँ एक ओर तुलसी रामवृत्त (रामकथा, रामगुण, रामनाम) के अंतर्गत वे अत्यन्त आशावादी हैं, परंतु अपने समकालीन समाजवृत्त (कलिकाल) के अंतर्गत वे घोर निराशावादी और भग्नाशावादी हैं। जहाँ तक उनके राम चरितांकन का सवाल है, उन्होंने अपने रामचरित-लेखन के वातावरण रंगने में तो अपने देश-काल के गाढ़े-ताजे रंग भरे, तथा पात्रों-घटनाओं को व्याख्यायित करने में अपने सम्प्रदाय एवं वेद-लोकरीति-समर्थित यथातथ्यता का इस्तेमाल किया। अतः मिथकीय रामवृत्त के चरित्र अलौकिक और लौकिक, दोनों शील धारण करते प्रतीत होते हैं। यहाँ तुलसी के राम वाल्मीकि कृत नर-नरोत्तम राम न होकर, नारायण अर्थात् सगुण परब्रह्म हो जाते हैं। वाल्मीकि रामायण के पात्रों की वैदिक-अर्ध-पौराणिक व्याख्याएँ प्रस्तुत करते हैं, वहाँ गोस्वामी तुलसीदास राम के मिथक-प्रतीक की एक तत्कालीन पूर्णरूपेण वैष्णव व्याख्या प्रस्तुत करते हैं। तुलसी की सृजन यात्रा 'रामलला नहछू' से शुरू होती है, जिसमें उनकी यौवन-सहज चंचलता विद्यमान हैं। वे रचना-कर्म का समापन 'हनुमान बाहुक' से करते हैं, जिसमें आधि-व्याधि से पीड़ित तुलसी अंततः राम भक्त हनुमान के शरण में जाकर राम की कृपा प्राप्त करना चाहते हैं। इस बीच राम के अनेक स्वरूपों का चरित्रांकन वे सटीक ढंग से कर पाए हैं। किशोर राजकुमार राम तथा दूलह श्रीराम के स्वरूपों के साथ-साथ परब्रह्म राम एवं राज-राजेश्वर श्रीराम भी यहाँ विद्यमान हैं। निःशंक कहा जा सकता है कि तुलसी के राम किशोर दूलह श्रीराम और संघर्षों तथा दुःखों से जूझते हुए निर्वासित आत्मविश्वासी श्रीराम ही उनके अपने श्रीरामचन्द्रजी हो सकते हैं।

**संदर्भ सूची :**

1. शर्मा, अभिषेक 'नीलकंठ', आज का समय और गोस्वामी तुलसीदास, (साहित्य अमृत पत्रिका अप्रैल 2010) जयपुर, पृ. 22
2. श्री शरण, तुलसीदास व्यक्तित्व और कृतित्व, आधुनिक प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 2002, पृ. 91
3. त्रिपाठी, विश्वनाथ, लोकवादी तुलसीदास, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, तीसरा संस्करण 2007 (दूसरी आवृत्ति -2011), पृ.16
4. मेघ रमेश कुन्तल, तुलसी आधुनिक वातायन से, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, पहला संस्करण 2007, पृ. 31
5. शास्त्री, विष्णुकान्त, तुलसी के हिय हेरि, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, तृतीय संस्करण 2002, पृ. 32
6. योगेन्द्र प्रताप सिंह, तुलसी के रचना सामर्थ्य का विवेचन, लोकभारती प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 1994, पृ. 9
7. श्री शरण, तुलसीदास व्यक्तित्व और कृतित्व, आधुनिक प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण 2002, पृ. 31
8. डॉ.लल्लन राय, तुलसी की साहित्य साधना, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1988, आमुख से पृ. 08
9. उदयभानु सिंह, तुलसीकाव्य मीमांसा, राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली, संस्करण 2008, पृ. 352

10. सं. शर्मा, डॉ. रमेशचंद्र / बाजपाई, डॉ. रुचि, गोस्वामी तुलसीदास व्यक्ति और काव्य, (आलेख- 'रामकथा के प्रमुख पात्रों का चरित्रांकन' लेखिका डॉ. रुचि तिवारी), विद्या प्रकाशन कानपुर, संस्करण 2007, पृ. 168
11. वर्मा, डॉ.रामाश्रय 'अखिलेश', पद्मावत और रामचरितमानस का तुलनात्मक काव्यशास्त्रीय अनुशीलन, अलका प्रकाशन कानपुर, प्रथम संस्करण 2005, पृ. 474
12. टीकाकार लाला भगवानदीन, गोस्वामी तुलसीदास कृत कवितावली, रामनारायण लाल बेनीप्रसाद प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता इलाहाबाद, संस्करण संवत 2002, पृ. 158-159